ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
Vol.-1; Issue-5 (Oct.-Dec.) 2024
Page No.- 30-34
©2024 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

डॉ. रमण कुमार ठाकुर
सहायक प्राध्यापक
श्री राधा कृष्ण
गोयनका महाविद्यालय,
सीतामढ़ी, बिहार.

Corresponding Author :

डॉ. रमण कुमार ठाकुर
सहायक प्राध्यापक
श्री राधा कृष्ण
गोयनका महाविद्यालय,
सीतामढ़ी, बिहार.

बिहार में ग्रामीण पर्यटन का महत्व मिथिला क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

रोजमर्रा की नीरस जीवन से फुर्सत के कुछ छन हमेशा मूड बेहतर बनाने का काम करते हैं आमतौर पर लोग इस फुर्सत का इस्तेमाल यात्राएं और नए स्थान खोजने के लिए करते हैं| परंतु लक्ष्य का चयन करने में समय और खर्च की महत्वपूर्ण भूमिका होती है| व्यस्त पर्यटक मौसम के दौरान परंपरागत पर्यटक स्थलों पर आमतौर पर भारी भीड़ होती है आज अधिकतर समाज शहरीकृत हो चुका है ऐसे में ग्रामीण पर्यटन शहरी आबादी के बीच निरंतर लोकप्रिय हो रहा है जब आप शहरी जीवन के व्यस्त कार्यक्रमों और शोर शराबों से थक जाते हैं और उससे मुक्त होना चाहते हैं शांति की तलाश में होते हैं तो आप गांव का रुख करना आवश्यक समझते हैं बच्चों के अवकाश हो या शहर के प्रदूषण और भीड़-भाड़ से दूर जाना हो तो हम ग्रामीण जीवन की ओर भागते हैं ताकि हम शांतिपूर्वक स्वच्छ वातावरण में सांस ले सके | भारत जो एक विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं की भूमि है यहां शहर के साथ-साथ ग्रामीण जीवन भी पर्याप्त है या यूं कहे कि भारत की नीव गांवों पर ही निर्भर करती है| आज भारत के कई प्रांत आधुनिकता का चोला ओढ़ चुके हैं| शहरी जीवन की भाग-दौड़ में इतने व्यस्त हो गए हैं कि व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य तक का होश नहीं है लेकिन भारत में कई गांव आज भी ऐसे हैं जो न केवल भारत को गौरवान्वित करते हैं बल्कि आज भी वहां भारत की सभ्यता संस्कृति परंपराए आदि यहां विद्यमान है|

पर्यटन एक ऐसी यात्रा (Travel) है जो मनोरंजन(recreational) या फुर्सत के क्षणों (leisure) का आनंद (Pleasure) उठाने के उद्देश्यों से की जाती है| विश्व पर्यटन संगठन(World tourism organisation) के अनुसार पर्यटक वह लोग हैं जो यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थान में रहने जाते हैं | यह द्वारा ज्यादा से ज्यादा 1 साल के लिए मनोरंजन, व्यापार, अन्य उद्देश्यों से किया जाता है, यह उस स्थान पर किसी खास क्रिया से संबंधित नहीं होता है|

भारतीय प्राचीन ग्रंथो में स्पष्ट रुप से मानव के विकास सुख और शांति की संतुष्टि विज्ञान के लिए पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है हमारे देश के ऋषि मुनियों ने भी पर्यटन को प्रथम महत्व दिया है प्राचीन गुरुओं (ब्राह्मण, ऋषि-तपसियों) ने भी यह कहकर कि " बिना पर्यटन मानव अंधकार प्रेमी होकर रह जाएगा|" पाश्चात्य विद्वान संत आगस्टिन तो यहां तक कह दिया कि "बिना विश्व दर्शन ज्ञान ही अधूरा है|" पंचतंत्र नामक भारतीय साहित्य दर्शन में कहा गया है- "विद्याकतिम शिल्प तावननापयोनती मानव: सम्यक यावद ब्रजति न भुमो देशा-देशांतर|"

पर्यटन दुनिया भर में एक आरामपूर्ण गतिविधि के रुप में लोकप्रिय हो गया है 2007 में 906 मिलियन से अधिक अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन के साथ 2007 की तुलना में 6.6% की वृद्धि दर्ज की गई है| 2007 में अंतरराष्ट्रीय पर्यटक प्राप्तियां USD 856 अरब थी|विश्व अर्थव्यवस्था में अनिश्चितताओं के बावजूद 2007 के पहले 4 महीनो के आगमन में 5% की वृद्धि हुई यह 2007 में समान अवधि में हुई वृद्धि के लगभग समान थी| धनी लोगो ने हमेशा दुनिया की बड़ी इमारतो और कलाकृतियों को देखने के लिए दूर-दूर के क्षेत्रों तक की यात्रा की है ऐसा वे नई भाषाये जानने (learn new languages) संस्कृतियों का अनुभव करने के लिए तथा नए और अलग स्वाद के व्यंजनों को चखने के लिए करते आए हैं| बहुत पहले रोमन गणराज्य (Roman Republic) के समय में कुछ स्थान जैसे-Baiae अमीर लोगों के लिए लोकप्रिय तटीय रिसार्ट थे|

शब्द पर्यटन का प्रयोग 1811 में किया गया और पर्यटक का 1840 में| 1836 में लीग ऑफ नेशंस ने विदेशी पर्यटकों को ऐसे व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया जो कम से कम 24 घंटे के लिए विदेश यात्रा करते हैं| उत्तराधिकारी संयुक्त राष्ट्र ने इस परिभाषा में 1945 में संशोधन किया और इसमें अधिकतम 6 माह का प्रवास शामिल कर दिया|

ऐसा कहा जा सकता है कि यूरोपीय पर्यटन ने मध्ययुगीन तीर्थ यात्रा को आरंभ किया है यद्यपि कैंटरबरी कहानियों (Centerbury Tales) में बताया गया है की तीर्थ यात्री प्रारंभिक रूप से धार्मिक कारणों से यात्रा पर जाते थे, फिर भी इसे अवकाश (Holiday) माना गया है अर्थात पवित्र दिन से व्युत्पन्न हुआ है जो फुर्सत के छनो से संबंधित है| संयुक्त राष्ट्र ने 1944 में पर्यटन आंकड़ों के अनुसार इसे तीन रूपों में वर्गीकृत किया: 1. घरेलू पर्यटन- जिसमें किसी देश के निवासियों की केवल उनके देश के अंदर यात्रा शामिल है और 2. इनबॉउंड पर्यटन- जिसमें गैर निवासियों की किसी देश में यात्रा शामिल है और 3. आउटबाउंड पर्यटन जिसमें निवासियों की दूसरे देश में यात्रा शामिल है|

ग्रामीण पर्यटन-भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन की परिभाषा में स्पष्ट किया है कि कोई भी ऐसा पर्यटन जो ग्रामीण जीवन कला संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहर को दर्शाता हो जिसे स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक लाभ पहुंचाता हो साथ ही पर्यटक को और स्थानीय लोगों के बीच संवाद से पर्यटन अनुभव की अधिक समृद्ध बनने की संभावना हो तो उसे ग्रामीण पर्यटन कहा जा सकता है| ग्रामीण पर्यटन अनिवार्यता एक ऐसी गतिविधि है जो देश के देहाती इलाकों में संचालित होती है यह बहुआयामी है, जिसमें खेत की पर्यटन संस्कृति, पर्यटन प्रकृति, पर्यटन साहसिक पर्यटन, और पर्यावरण पर्यटन शामिल है परंपरागत पर्यटन के विपरीत ग्रामीण पर्यटन की कुछ खास विशेषताएं हैं जैसे यह अनुभव उन्मुख होता है इसके पर्यटक स्थलों पर आबादी बिखरी हुई होती है इसमें प्राकृतिक वातावरण की प्रमुखता होती है यह त्योहार और स्थानीय उत्सवों से सराबोर होता है और संस्कृति धरोहर और परंपरा के संरक्षण पर आधारित होता हैं|

भारत में ग्रामीण पर्यटन के प्रमुख प्रकार:

* **कृषि पर्यटन:-** कृषि उद्योग और फसले उगाने के लिए किसान कैसे काम करते हैं, के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना|

*** संस्कृति पर्यटन:-** पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति विषय गतिविधियों जैसे अनुष्ठानों और उत्सवों में हिस्सा लेने का अवसर प्रदान करना|

*** प्रकृति पर्यटन:-** ऐसे प्राकृतिक स्थलों के जिम्मेदारी के साथ यात्रा करना जो पर्यावरण का संरक्षण करते हैं और स्थानीय लोगों के कल्याण में सुधार लाते हैं|

*** साहसिक पर्यटन:-** कोई भी ऐसी रचनात्मक गतिविधि साहसिक पर्यटन के अंतर्गत शामिल है जो किसी व्यक्ति की क्षमता और अंतिम सीमा तक उसकी तैयारी का प्रशिक्षण करने का अवसर प्रदान करती है|

*** भोजन पर्यटन:-** जहां पर्यटकों को हमारे व्यंजनों की विविधता का आनंद लेने का अवसर मिलता है इस तरह का पर्यटन भोजन और विभिन्न स्थानों के प्रमुख भोजन की जानकारी प्राप्त करने में मदद करता है|

*** समुदाय पारिस्थितिकी पर्यटन:-** यह ऐसा पर्यटन है जो किसी उद्देश्य के लिए किया जाता है यह वास्तव में ऐसी प्राकृतिक स्थलों के जिम्मेदारीपूर्ण यात्रा है जो पर्यावरण संरक्षण करते हैं और स्थानीय लोगों की खुशहाली में सुधार लाते हैं|

*** निर्जातीय पर्यटन:-** इसका उद्देश्य विभिन्न संस्कृतियों के क्षितिजों का विस्तार करना है इसका अनिवार्य लक्ष्य विभिन्न जातीय और सांस्कृतिक जीवनशैलियों और विश्वासों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है|

* शहरों में जहां प्रकृति का दोहन होता है वही गांव में आप स्वयं को प्रकृति के करीब पाएंगे| यहां गांव के स्वादिष्ट और प्राकृतिक रस से भरपूर भोजन को आप जब चखेगे तो अपनी उंगलियां चाटने पर मजबूर हो जाएंगे| इन व्यंजनों की खासियत है कि यहाँ आज भी मिट्टी के बर्तनों में तैयार किए जाते हैं| पृथ्वी पर जीवन जीने का नया ढंग स्वाद साधारण सुख और भारतीय गांव की जीवन संस्कृतियों आपकी भावना को फिर से जीवंत कर सकती है| यहां के लोक संगीत के ताल आपके दिल को प्रभावित कर सकते हैं| भारत के विभिन्न गांव अपनी विभिन्न संस्कृतियों, बोली- भाषओ और परंपराओं के साथ आपका स्वागत करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं| यदि आप परंपरागत ग्रामीण झोपड़िया में रहने का अनुभव करने के इच्छुक है तो इनका आनंद लेने के लिए आप भारत के इन गाँवो की सैर कर सकते हैं जहां की प्राकृतिक खूबसूरती और सभ्यता आपका मन मोह लेगी| हम आपको भारत के कुछ ऐसे ही गांव और पर्यटन के बारे में बता रहे हैं जहां जाने के बाद आपका वहां से आने का बिल्कुल मन नहीं करेगा| पर्यटक स्थल बिहार के मिथिला क्षेत्र में भी भरे पड़े हैं जिनका संबंध विश्व साहित्य की धरोहर महाकाव्य रामायण से है |

*** बिहार में पर्यटन:** बिहार में हिंदू मुसलमान बौद्ध जैन एवं सिख धर्म के अनेक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है इनमें गया (हिंदू) मनेर एवं फुलवारी शरीफ (मुसलमान) राजगीर वैशाली व बोधगया (बौद्ध) पावापुरी (जैन) और पटना साहिब (सिख) गोलघर आदि उल्लेखनीय धार्मिक एवं भ्रमणीय स्थल है |

*** सीतामढ़ी:** सीतामढ़ी भारत के बिहार राज्य का प्रमुख शहर है जो पौराणिक आख्यानों में सीता की जन्मस्थ सीतामढ़ी पौराणिक आख्यानों में त्रेतायुगीन शहर के रूप में वर्णित है| त्रेता युग में राजा जनक की पुत्री तथा भगवान राम की पत्नी देवी सीता का जन्म पुनौरा में हुआ था | पौराणिक मान्यता के अनुसार मिथिला एक बार दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई थी, पुरोहितों और पंडितों ने मिथिला के राजा जनक को अपने क्षेत्र की सीमा में हल चलाने की सलाह दी| कहते हैं कि सीतामढ़ी के पुनौरा नामक स्थान पर जब राजा जनक ने खेत में हल जोता था तो उस समय धरती से सीता का जन्म हुआ था सीता के जन्म के कारण इस नगर का नाम पहले सीतामडई फिर सीतामही और कालांतर में सीतामढ़ी पडा | ऐसी जनश्रुति है कि सीता जी के प्रकाटय स्थल पर उनके विवाह पश्चात राजा जनक ने भगवान राम और जानकी की प्रतिमा लगवाई थी | लगभग 500 वर्ष पूर्व अयोध्या के एक संत बीरबल दास ने ईश्वरीए प्रेरणा पाकर उन प्रतिमाओं को खोज और उनका नियमित पूजन आरंभ हुआ | यह स्थान आज जानकी कुंड के

नाम से जाना जाता है | प्राचीन काल में सीतामढ़ी तिरहुत का अंग रहा है| इस क्षेत्र में मुस्लिम शासन आरंभ होने तक मिथिला के शासको के कर्नाटक वंश ने यहां शासन किया बाद में भी स्थानीय छत्रपो ने यहां अपनी प्रभुता कायम रखी लेकिन अंग्रेजों के आने पर यह पहले बंगाल फिर बिहार प्रांत का अंग बन गया | 1908 ईस्वी में तिरहुत मुज़फ्फरपुर जिला का हिस्सा रहा | स्वतंत्रता पश्चात 11 दिसंबर 1972 को सीतामढ़ी को स्वतंत्र जिला का दर्जा मिला, जिसका मुख्यालय सीतामढ़ी को बनाया गया | त्रेतायूगीन याख्यानो में दर्ज हिंदू तीर्थ-स्थल बिहार के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है |

*** जानकी स्थान और उर्वीजाकुंड:-** सीतामढ़ी नगर के पश्चिमी छोर पर जानकी स्थान और उर्विजा कुंड है | सीतामढ़ी रेलवे स्टेशन से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित स्थल हिंदू धर्म में विश्वास रखने वालों के लिए अति पवित्र है | ऐसा कहा जाता है कि उक्त कुंड के जीर्णोद्धार के समय आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व उसके अंदर उर्वीजा सीता की एक प्रतिमा प्राप्त हुई थी, जिसकी स्थापना जानकी स्थान के मंदिर में की गई | कुछ लोगों का कहना है कि वर्तमान जानकी स्थान के मंदिर में स्थापित जानकी जी की मूर्ति वही है जो कुंड की खुदाई के समय उसके अंदर से निकली थी |

*** पुनौरा स्थित जानकी मंदिर:-** यह स्थान पौराणिक काल में पुंडरीक ऋषि के आश्रम के रुप में विख्यात था | कुछ लोगों का यह भी मत है कि सीतामढ़ी से लगभग 5 किलोमीटर पश्चिम स्थित पुनौरा में ही देवी सीता का जन्म हुआ था | मिथिला नरेश जनक ने इंद्रदेव को खुश करने के लिए अपने हाथों से यहां हल चलाया था| इसी दौरान एक मृदापात्र में देवी सीता बालिका रुप में उन्हें मिली | मंदिर के अलावे यहां पवित्र कुंड है |

*** हलेश्वर स्थान:-** सीतामढ़ी से 3 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में इस स्थान पर राजा जनक ने पुत्रेष्टि यज्ञ के पश्चात भगवान शिव का मंदिर बनवाया था जो हलेश्वर स्थान के नाम से प्रसिद्ध है |

*** पंथ पाकड़:-** सीतामढ़ी से 5 किलोमीटर उत्तर पूर्व में बहुत पुराना पाकड़ का एक पेड़ है जिसे रामायण काल का माना जाता है | ऐसी मान्यता है कि देवी सीता को जनकपुर से अयोध्या ले जाने के समय उन्हें पालकी से उतार कर इस वृक्ष के नीचे विश्राम कराया गया था |

*** बगही मठ:-** सीतामढ़ी से 7 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में स्थित बगही मठ में 108 कमरे बने हैं पूजा तथा यज्ञ के लिए इस स्थान की बहुत प्रसिद्ध है |

*** देवकुली (ढेकुली):-** ऐसी मान्यता है कि पांडवों की पत्नी द्रोपदी का यहां जन्म हुआ था सीतामढ़ी से 19 किलोमीटर पश्चिम स्थित ढेकुली में अत्यंत प्राचीन शिवमंदिर है जहां महाशिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है |

*** गोरौल शरीफ:-** सीतामढ़ी से लगभग 26 किलोमीटर दूर गोरौल शरीफ बिहार के मुसलमान के लिए बिहार शरीफ तथा फुलवारी शरीफ के बाद सबसे अधिक पवित्र है |

*** जनकपुर:-** सीतामढ़ी से लगभग 35 किलोमीटर पूरब एन एच 104 से भारत नेपाल सीमा पर जाकर नेपाल के जनकपुर जाया जा सकता है | सीमा खुली है तथा यातायात की अच्छी सुविधा है इसलिए राजा जनक की नगरी तक यात्रा करने में कोई परेशानी नहीं है | यह वह भूमि है जहां राजा जनक के द्वारा आयोजित स्वयंवर में शिव के धनुष को तोड़कर भगवान राम ने माता सीता के साथ विवाह रचाया था |

*** दरभंगा:-** उत्तरी बिहार में बागमती नदी के किनारे बसा दरभंगा एक जिला एवं प्रमंडलीय मुख्यालय है दरभंगा प्रमंडल के अंतर्गत तीन जिले दरभंगा, मधुबनी, एवं समस्तीपुर आते हैं दरभंगा के उत्तर में मधुबनी, दक्षिण में समस्तीपुर, पूर्व में सहरसा, एवं पश्चिम में मुजफ्फरपुर तथा सीतामढ़ी जिला है | दरभंगा शहर के बहुविद्य एवं आधुनिक स्वरूप का विकास 16वीं शताब्दी में मुगल व्यापारियों तथा ओइनवार शासको द्वारा विकसित किया गया | अपनी प्राचीन संस्कृति और बौद्धिक परंपरा के लिए यह शहर विख्यात रहा है

| इसके अलावे यह जिला आम और मखाना के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है |

*** इतिहासः-**

वैदिक स्रोतों के मुताबिक आयो की विदेह शाखा ने अग्नि के संरक्षण में सरस्वती तट से पूर्व में सदानिरा गंडक की और कुच किया और विदेह राज्य की स्थापना की | विदेह के राजा मिथि के नाम पर यह प्रदेश मिथिला कहलाने लगा| रामायण काल में मिथिला के एक राजा, जो जनक कहलाते थे उन जनक राजाओं में से सिरध्वज जनक की पुत्री सीता थी | विदेह राज्य का अंत होने पर यह प्रदेश वैशाली गणराज्य का अंग बना | इसके पश्चात यह मगध के मौर्य, शुंग, कनव और गुप्त शासको के महान साम्राज्य का हिस्सा रहा | 13वीं सदी में पश्चिम बंगाल के मुसलमान शासक हाजी शमसुद्दीन इलियास के समय मिथिला एवं तिरहुत क्षेत्रों का बटवारा हो गया | उत्तरी भाग, जिसके अंतर्गत मधुबनी दरभंगा एवं समस्तीपुर का उत्तरी हिस्सा आता था, सुगौना के ओईनवाड़ राजा कामेश्वर सिंह के अधीन रहा | ओईनवार राजाओं को कला संस्कृति और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है कुमारील भट्ट, मंडन मिश्र, गदाधर पंडित, शंकर, वाचस्पति मिश्र, विद्यापति, नागार्जुन आदि महान विद्वानों के लेखन से इस क्षेत्र में प्रसिद्धि पाई | ओईनवार राजा शिव सिंह के पिता देव सिंह ने लहरिया सराय के पास देवकुली की स्थापना की थी | शिव सिंह के बाद यहां पदम सिंह, हरि सिंह,नरसिंह, देवधीर सिंह, भैरव सिंह, रामभद्र, लक्ष्मी नाथ, कामस नारायण राजा हुए | शिव सिंह तथा भैरव सिंह द्वारा जारी किए गए सोने एवं चांदी के सिक्के यहां के इतिहास ज्ञान का अच्छा स्रोत है | दरभंगा शहर 16वीं सदी में दरभंगा राज की राजधानी थी | 1945 ईस्वी में ब्रिटिश सरकार ने दरभंगा सदर को अनुमंडल बनाया और 1964 ईस्वी में दरभंगा शहर नगर निकाय बन गया | 1975 में स्वतंत्र जिला बनने तक यह तिरहुत के साथ था 1908 में तिरहुत के प्रमंडल बनने पर इसे पटना प्रमंडल से हटकर तिरहुत में शामिल कर लिया गया स्वतंत्रता के पश्चात 1962 में दरभंगा को प्रमंडल का दर्जा देकर मधुबनी तथा समस्तीपुर को इसके अंतर्गत रखा गया |

*** ग्रामीण पर्यटन और अर्थव्यवस्था:-** बढ़ते ग्रामीण पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ता है| ग्रामीण भारत में पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ लोगों के बीच व्यापार का स्तर बढ़ने से उनकी आय का स्तर भी बढ़ेगा | इससे युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे | किसी भी स्थान के परंपरागत हथकरघा और हस्तशिल्प स्थानीय लोगों के लिए गौरव का विषय होते हैं पर्यटन के माध्यम से पर्यटकों को स्थानीय लोगों से तैयार उत्पाद सीधे खरीदने का लाभ प्राप्त होता है इसका समूची अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है | पर्यटकों के साथ विचारों के आदान-प्रदान से ग्रामीण लोगों में नए विचार सृजित होंगे, इससे शिक्षा निवारक, स्वास्थ्य देखभाल,आधुनिक उपकरणों आदि के प्रति लोगों की रुचि बढ़ेगी | इससे साक्षरता का सर्वत्र प्रसार करने में भी मदद मिलेगी | अधिकाधिक पर्यटकों द्वारा गांवों की यात्रा करने से सड़कों के माध्यम से संपर्क में सुधार आएगा और सार्वजनिक परिवहन में बढ़ोतरी होगी | अभ्यारणों और सुरक्षित उद्यानों के निकट रहने वाले ग्रामीण अपने शहरी सहभागियों को प्रकृति के संरक्षण की शिक्षा दे सकते हैं सदियों से प्रकृति की शरण में रहने के कारण उन्हें प्रकृति के संरक्षण के तौर-तरीकों की जानकारी निश्चित रूप से अधिक होती है पर्यटक स्थानीय धार्मिक और परंपरागत अनुष्ठानों में रुचि विकसित कर सकते हैं, जो सामाजिक सद्भाव के प्रेरक के रूप में काम कर सकती है |

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेम अरोड़ा चार धाम गाइड कोर्स
2. पर्यटन सिद्धांत और व्यवहार, सी. कूपर, जैफलेचर, एथलनसस, डी. गिल्बर्ट तीसरा संस्करण 2005 मैड्रिड
3. पंचतंत्र
4. बिहार में पर्यटन, मुक्त ज्ञानकोष विकिपीडिया से